قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ ﴿١﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ ﴿٢﴾ لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ ﴿٣﴾ وَلَمْ

तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है[2] **अल्लाह** बे नियाज़ है[3] न उस की कोई औलाद[4] और न वोह किसी से पैदा हुवा[5] और न

يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۧ ﴿٤﴾

उस के जोड़ का कोई[6]

ع

ركوعها ١ ﴿١١٣﴾ سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ ﴿٢٠﴾ اٰياتها ٥

सूरए फ़लक़ मक्किय्या है, इस में पांच आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ ﴿١﴾ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ ﴿٢﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا

तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह़ का पैदा करने वाला है[2] उस की सब मख़्लूक़ के शर से[3] और अंधेरी डालने वाले के शर से जब

में इस सूरत की बहुत फ़ज़ीलतें वारिद हुई हैं, इस को तिहाई क़ुरआन के बराबर फ़रमाया गया या'नी तीन मरतबा इस को पढ़ा जाए तो पूरे क़ुरआन की तिलावत का सवाब मिले, एक शख़्स ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से अ़र्ज़ किया कि मुझे इस सूरत से बहुत मह़ब्बत है फ़रमाया इस की मह़ब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल करेगी। (ترمذی) **शाने नुज़ूल :** कुफ़्फ़ारे अ़रब ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم से **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَعَلٰی तबारक व तआ़ला के मुतअ़ल्लिक़ त़रह़ त़रह़ के सुवाल किये, कोई कहता था कि **अल्लाह** का नसब क्या है ? कोई कहता था कि वोह सोने का है या चांदी का है ? या लोहे का है या लकड़ी का है ? किस चीज़ का है ? किसी ने कहा वोह क्या खाता है, क्या पीता है ? रबूबिय्यत उस ने किस से विरसे में पाई ? और उस का कौन वारिस होगा ? उन के जवाब में **अल्लाह** तआ़ला ने येह सूरत नाज़िल फ़रमाई और अपने ज़ातो सिफ़ात का बयान फ़रमा कर मा'रिफ़त की राह वाज़ेह़ की और जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ातो सिफ़ात के अन्वार के बयान से मुज़्मह़िल कर दिया। **2 :** रबूबिय्यत व उलूहिय्यत में सिफ़ाते अ़ज़्मतो कमाल के साथ मौसूफ़ है, मिस्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है, उस का कोई शरीक नहीं। **3 :** हर चीज़ से। न खाए न पिये, हमेशा से है हमेशा रहे। **4 :** क्यूं कि कोई उस का मुजानिस नहीं। **5 :** क्यूं कि वोह क़दीम है और पैदा होना ह़ादिस की शान है। **6 :** या'नी कोई उस का हम्ता व अ़दील नहीं। इस सूरत की चन्द आयतों में इ़ल्मे इलाहिय्यात के नफ़ीस व आ'ला मत़ालिब बयान फ़रमा दिये गए जिन की तफ़्सीलात से कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने लबरेज़ हो जाएं। **1 :** "सूरए फ़लक़" मदनिय्या है और एक क़ौल येह है कि मक्किय्या है। "وَالْاَوَّلُ اَصَحُّ" (या'नी मदनिय्या वाला क़ौल ज़ियादा सह़ीह़ है) इस सूरत में एक रुकूअ़, पांच आयतें, तेईस कलिमे, चोहत्तर ह़र्फ़ हैं। **शाने नुज़ूल :** येह सूरत और सूरतुन्नास जो इस के बा'द है येह उस वक़्त नाज़िल हुई जब कि लबीद बिन आ'सम यहूदी और उस की बेटियों ने हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم पर जादू किया और हुज़ूर के जिस्मे मुबारक और आ'ज़ाए ज़ाहिरा पर इस का असर हुवा, क़ल्ब व अ़क़्ल व ए'तिक़ाद पर कुछ असर न हुवा। चन्द रोज़ के बा'द जिब्रील (عَلَیْہِ السَّلَام) आए और उन्हों ने अ़र्ज़ किया कि एक यहूदी ने आप पर जादू किया है और जादू का जो कुछ सामान है वोह फुलां कूंएं में एक पथ्थर के नीचे दाब दिया है। हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने अ़लिय्ये मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को भेजा, उन्हों ने कूंएं का पानी निकालने के बा'द पथ्थर उठाया, उस के नीचे से खजूर के गाभे की थेली बरआमद हुई, उस में हुज़ूर के मूए शरीफ़ जो कंघी से बरआमद हुए थे और हुज़ूर की कंघी के चन्द दन्दाने और एक डोरा या कमान का चिल्ला जिस में ग्यारह गिरहें थीं और एक मोम का पुतला जिस में ग्यारह सूइयां चुभी थीं, येह सब सामान पथ्थर के नीचे से निकला और हुज़ूर की ख़िदमत में ह़ाज़िर किया गया। **अल्लाह** तआ़ला ने येह दोनों सूरतें नाज़िल फ़रमाईं, इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं पांच सूरए फ़लक़ में, हर एक आयत के पढ़ने के साथ ही एक गिरह खुलती जाती थी यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुज़ूर बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गए। **मस्अला :** ता'वीज़ और अ़मल जिस में कोई कलिमा कुफ़्र या शिर्क का न हो जाइज़ है, ख़ास कर वोह अ़मल जो आयाते क़ुरआनिय्या से किये जाएं या अह़ादीस में वारिद हुए हों, ह़दीस शरीफ़ में है कि अस्मा बिन्ते उ़मैस ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم जा'फ़र के बच्चों को जल्द जल्द नज़र होती है क्या मुझे इजाज़त है कि उन के लिये अ़मल करूं ? हुज़ूर ने इजाज़त दी। (ترمذی) **2 :** तअ़व्वुज़ में **अल्लाह** तआ़ला का इस वस्फ़

www.dawateislami.net

وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۝۴ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝۵ ع ۱ ع ۵ ۳۸

वोह डूबे[4] और उन औ़रतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं[5] और ह़सद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले[6]

ركوعها ۱ | ۱۱۴ سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ ۲۱ | اٰياتها ۶

सूरए नास मक्किय्या है, इस में छ[6] आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝۱ مَلِكِ النَّاسِ ۝۲ اِلٰهِ النَّاسِ ۝۳ مِنْ شَرِّ

तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब[2] सब लोगों का बादशाह[3] सब लोगों का ख़ुदा[4] उस के शर से जो दिल

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝۴ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝۵

में बुरे ख़त़रे डाले[5] और दबक रहे[6] वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं

مِنَ الْجِنَّةِ وَ النَّاسِ ۝۶ ع ۱ ع ۶ ۳۹

जिन्न और आदमी[7]

दुआ़ए ख़त्मुल क़ुरआन

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِیْ فِیْ قَبْرِیْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِیْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِیْمِ وَاجْعَلْهُ لِیْۤ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًی وَّرَحْمَةً ؕ اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِیْ مِنْهُ مَانَسِیْتُ وَعَلِّمْنِیْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِیْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ اللَّیْلِ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ حُجَّةً یَّا رَبَّ الْعَالَمِیْنَ۔

(الجامع الصغير للسيوطی، الحديث: ۵۷۱، ص ۴۱، دار الكتب العلمية بيروت وتفسير روح البيان، سورة الاسراء، تحت الآية: ۱۰، ج۵، ص ۱۳۶، كوئٹه)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ بِعَدَدِ مَا فِیْ جَمِیْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا۔

(تفسير روح البيان، سورة الاحزاب، تحت الآية: ۵۶، ج۷، ص ۲۳۵، كوئٹه)

تمت بالخير

के साथ ज़िक्र इस लिये है (कि) अल्लाह तआ़ला सुब्ह़ पैदा कर के शब की तारीकी दूर फ़रमाता है तो वोह क़ादिर है कि पनाह चाहने वाले को जिन ह़ालात से ख़ौफ़ है उन को दूर फ़रमाए, नीज़ जिस त़रह़ शबे तार में आदमी तुलूए़ सुब्ह़ का इन्तिज़ार करता है ऐसा ही ख़ाइफ़ अम्नो राह़त का मुन्तज़िर रहता है, इलावा बरीं सुब्ह़ अहले इज़्त़िरार व इज़्त़िराब की दुआ़ओं का और उन के क़बूल होने का वक़्त है, तो मुराद येह हुई कि जिस वक़्त अरबाबे करम व ग़म को कशाइश दी जाती हैं और दुआ़एं क़बूल की जाती हैं, मैं उस वक़्त के पैदा करने वाले की पनाह चाहता हूं। एक क़ौल येह भी है कि "फ़लक़" जहन्नम में एक वादी है। 3 : जानदार हो या बेजान, मुकल्लफ़ हो या ग़ैर मुकल्लफ़। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने फ़रमाया है कि मख़्लूक़ से मुराद ख़ास इब्लीस है जिस से बदतर मख़्लूक़ में कोई नहीं और जादू के अ़मल इस की और इस के आ'वान व लश्कर की मदद से पूरे होते हैं। 4 : ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन आ़इशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने चांद की त़रफ़ नज़र कर के उन से फ़रमाया : ऐ आ़इशा ! अल्लाह की पनाह लो इस के शर से, येह अंधेरी डालने वाला है जब डूबे। (ترمذی) या'नी आख़िरे माह में जब चांद छुप जाए तो जादू के वोह अ़मल जो बीमार करने के लिये हैं उसी वक़्त में किये जाते हैं। 5 : या'नी जादूगर औ़रतें जो डोरों में गिरह लगा लगा कर उन में जादू के मन्तर पढ़ पढ़ कर फूंकती हैं, जैसे कि लबीद की लड़कियां।